सनातन संस्कृति का मूलज्ञान

विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता का अनंत ज्ञान

प्रतीक प्रजापति

सनातन संस्कृति का मूलज्ञान

विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता का अनंत ज्ञान

इस **पुस्तक का उद्देश्य सनातन संस्कृति के मूलभूत ज्ञान** को आज के मॉडर्न **लोगों तक** सबसे सरल तरीक़े से **पहुँचाना है।** जिसको जीवन में उतार के वे अपना, अपनों का और अंततः पूरे समाज का हित कर सकें।

इसी **ज्ञान** को आगे **विस्तार से** या तो हम किसी **प्रामाणिक गुरु शिष्य परंपरा से** उचित गुरु के मार्गदर्शन से **प्राप्त कर सकते है;**

या फिर,
Veducation के अभी के और भविष्य के वीडियो, पॉडकास्ट एवं पुस्तकों से ले सकते हैं। जहाँ सारे वैदिक **शास्त्रों का ज्ञान** विस्तार से **समझाया जाएगा।**

PRATEEIK PRAJAPATI

इस पुस्तक को हम
अर्पण करते है,

हमारी सभी महान **गुरु शिष्य परम्पराओ,**
उत्कृष्ठ **साधुओ** तथा गौरवान्वित **शास्त्रों** को;
जिनकी **कृपा से** ये दिव्य **ज्ञान**
आज के इस **कलियुग** के समय में भी
हम पतित आत्माओं के लिए **उपलब्ध है।**

आप क्या सीखोगे?

1. **आत्मा, जीव** का मूलज्ञान
2. **परमात्मा, भगवान, ईश्वर** का मूलज्ञान
3. **देवी - देवता**ओं का मूलज्ञान
4. **प्रकृति** का मूलज्ञान
5. **योग** का मूलज्ञान
6. **धर्म** का मूलज्ञान
7. **कर्म** का मूलज्ञान
8. **ब्रह्मांड** का मूलज्ञान
9. **समय, काल** का मूलज्ञान
10. **शास्त्रों** का मूलज्ञान
11. **सनातन संस्कृति** का मूलज्ञान

तो शुरू करें?

पठन से पहले प्रार्थना !

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नम : ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।।

सनातन : जिसका ना कोई आरंभ है, ना ही कोई अंत
संस्कृति : जीवन जीने का तरीक़ा

सनातन संस्कृति : जीवन जीने का अनादि तरीका

अब,

कुछ समय के लिए,
जैसे जैसे आप इस दिव्य ज्ञान
की पुस्तक के पन्ने पलटते जाएं,

भूल जाइये की
आप कौन हो?
कहाँ हो?
क्या जानते हो?
और क्या मानते हो?

सब कुछ भूल जाइये।

और एक शांत से कोने में बैठकर,
इस पुस्तक को ऐसे पढ़िए,
जैसे कि आप आकाशगंगा बीच में तैर रहे हो
और **ब्रह्मांड आपसे बातें कर रहा है।**

क्योंकि

अब आप जो पढ़ने जा रहे हो,
वो कोई **साधारण** सांसारिक **ज्ञान नहीं है।**

हो सकता है,
आपने इसके बारे में कुछ पढ़ा हो, कुछ सुना हो,
और शायद औरों को इसके बारे में बताया भी हो।

लेकिन **आज**,
कुछ समय के लिए,

सबकुछ भूल जाइए।

आज,

हम इस ज्ञान की ओर उस तरह बढ़ेंगे जैसे एक **आदर्श शिष्य**
आदर्श ज्ञान की प्राप्ति के लिए,
एक **आदर्श शिक्षक (गुरु)** की ओर बढ़ता है;

अपने आप को संपूर्णतः मूर्ख जानकर।

जो स्वीकार करता है कि वो कुछ नहीं जानता
और अपने मन को एक कोरा काग़ज़ बनाकर समर्पित कर देता है
जिस पर कुछ भी पहले से लिखा हुआ नहीं है।

आज,

हम सिर्फ **ज्ञान** लेंगे नहीं,
परंतु हम उस **पर विचार विमर्श** भी **करेंगे।**

जो हम कभी नहीं करते।

परंतु
आज,

हम फिरसे शुरुआत करेंगे।

आत्मा

जीव

आत्मज्ञान,

ये वो ज्ञान है जो **सुनने में** एकदम **सरल** लगता है लेकिन **समझने पर** उतना ही **गहरा** होता है।

इसी ज्ञानके साक्षात्कार से,
महान से महान **ऋषि मुनियों ने** बड़ी बड़ी शक्तियाँ, सिद्धियाँ और उच्चतम लोकों को प्राप्त किया हैं, तथा इसी ज्ञान से ही उन्हों ने **जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को** भी **प्राप्त किया है।**

ये ज्ञान तब शुरू होता है जब हम
भौतिक तत्त्व और आत्मा तत्त्व के बीच का अंतर समझने लगते हैं।
तभी हमें ये स्पष्ट होने लगता है कि,

हम ये शरीर नहीं हैं

हम आत्मा हैं।

'अहं ब्रह्मास्मि'

मैं एक **शाश्वत आत्मा** हूँ।

हमारा **शरीर** एक **वाहन** की तरह **है,**
जिसमें हम, **जीवात्मा**,
एक **वाहन चालक** की तरह बैठे **हैं।**

अब ये पढ़कर,
हम ये सोचना शुरू कर देंगे कि,
'अरे हाँ, हाँ, मुझे पता है,
हम ये शरीर नहीं हैं, हम आत्मा हैं,
आत्मा शरीर बदलती रहती है,
आत्मा शाश्वत है।'
वगैरह वगैरह..
'अरे प्रभु!
ये सब तो हम जानते हैं,
कुछ नया बताओ!'

और फिर, हम इस ज्ञान पर कभी विचार ही नहीं करते,
और फिर से हमारे सांसारिक दिनचर्या में वापस लौट जाते हैं।

परंतु आज नहीं।

आज,

सोचिए,

आपका शरीर,
कितना भी सुंदर, तंदुरुस्त, मोटा, पतला, स्वस्थ, रोगी, युवा या वृद्ध हो,
आख़िर में तो एक जटिल यंत्र के सिवाय और कुछ भी नहीं है।
यन्त्रारूढानि मायया ।। - भगवद् गीता 18.61

जो **11 इंद्रियों** से बना है:
5 ज्ञानेन्द्रिय + 5 कर्मेन्द्रिय + 1 उभयेन्द्रिय

5 ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से,
हमारा शरीर सूचना के रूप में जानकारी प्राप्त करता है।

1. **आँखों** से दृश्य
2. **कानों** से आवाज
3. **नाक** से गंध
4. **जीभ** से स्वाद तथा
5. **त्वचा** से स्पर्श।

इस जानकारी के उपयोग से, हमारा शरीर क्रिया करता है
और **5 कर्मेंद्रियों** के माध्यम से कार्य पूरा करता है।

6. **हाथ**
7. **पैर**
8. **मुँह**
9. **जननांग**
10. **मलाशय।**

इन सभी को संचालित करती है **11वी उभयेंद्रिय,**

11. **मन**

इसलिए,

हमारे इस यंत्र जैसे **शरीर का मुख्य कार्य** है,

ज्ञानेंद्रियों से **जानकारी लेना**,

उभयेंद्रिय से **उस** जानकारी **का संचालन करना और**

कर्मेन्द्रियों से अपना **कार्य** पूरा **करना**।

लेकिन,

वो क्या है जो ये सब करने की

इच्छा करता है, सोचता है और उसका **अनुभव करता हैं?**

या फिर ये पूछें की वो,

कौन है?

जो इच्छा करता है,

सोचता है और इन सब का अनुभव करता है।

क्योंकि,
इच्छा करना, सोचना और अनुभव करना
ये सब **शरीर द्वारा नहीं किया जाता।**

ये सब कुछ
कोई और ही करता है!

और वो कोई और है
आत्मा : जीव : ब्रह्म

इसलिये,
अहं ब्रह्मास्मि : मैं एक आत्मा हूँ।

तो हम,
जीवात्मा,
जब इस भौतिक संसार में आते हैं,
तो इस भौतिक शरीर को अपनाते हैं,
जो कि **प्रकृति के पाँच प्राथमिक तत्त्वों (पंचमहाभूतों)** से बनी है,

1. **धरती**
2. **जल**
3. **अग्नि**
4. **वायु**
5. **आकाश**

परंतु इस भौतिक शरीर के उपरांत
हमारा **एक और शरीर** है,
जिसे हम जहाँ भी जाते है,
लेकर जाते हैं;
मृत्यु के बाद भी।

वो शरीर इन 5 स्थूल तत्वों से नहीं,
परंतु **3 सूक्ष्म तत्वों** से बना है,

1. **मन**
2. **बुद्धि**
3. **मिथ्या-अहंकार**

अब
यहाँ से शुरु होता है
जीवन का वास्तविक खेल।

हम,
हमारे विचारों, इच्छाओं और कर्मों से
हमारे सूक्ष्म शरीर को आकार देते हैं।

और वो **सूक्ष्म शरीर हमारे**
स्थूल (भौतिक) शरीर को आकार देता है।

उदाहरण के लिए,
यदि हमारे **विचार अस्वस्थ** और **अनियंत्रित** हैं,
तो हमारे **कर्म** भी **अस्वस्थ** और **अनियंत्रित** हो जाते हैं,
जिससे हमारा **शरीर भी अस्वस्थ** और **अनियंत्रित** हो जाता है।

लेकिन यदि हमारे **विचार स्वस्थ** और **नियंत्रित** हैं,
तब हमारे **कर्म** भी **स्वस्थ** और **नियंत्रित** होंगे,
जिससे हमारा **शरीर भी स्वस्थ और नियंत्रित** रहता है।

और ज़्यादातर समय इनकी वजह से हमारे आसपास का वातावरण
और हमारे सम्बंध भी शुद्ध, स्वस्थ और नियंत्रित बनते है।

अब समझिए की,
ये तथ्य मात्र हमारी रोजिंदा आदतों तक ही सीमित नहीं है।
ये तथ्य **जीवन और मृत्यु से परे** भी लागू होते हैं**।**

आइए समझते हैं,
तो भगवान ने ये भौतिक संसार इसलिए बनाया
क्यूँकि हम, जीवात्माएँ, हमारी निजी इच्छाएँ पूरी करना चाहते है।

इसलिए अपने पूरे जीवन के दौरांत हमने
अपनी इच्छाओं को जैसा भी आकार दिया है;
उन **इच्छाओं को पूरा करने के लिए**,
जो भी शरीर सबसे उपयुक्त है,
हमें वो **शरीर अगले जन्म में मिलता हैं।**

उदाहरण के लिए,
यदि हम जीवन भर भालू की तरह **सोने में ही रुचि रखे हैं,**
तो हमें भालू का शरीर मिलता है जिसमें हम ज्यादा समय तक सो सकते हैं
और अपनी सोने की इच्छा को और अच्छे से पूरा कर सकते हैं।

अगर हम भेड़िये की तरह **मांस खाने में ही रुचि रखे हैं,**
तो हमें भेड़िये या कुत्ते का शरीर मिलता है,
जो मांस खाने की हमारी इच्छा को पूरा करने के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

और यदि हम हमारे पुरे जीवन में,
संभोग संभोग और **संभोग में ही रुचि रखे हैं,**
तो फिर उसी के अनुसार **हमे सूअर या कबूतर का शरीर मिलता है;**
जहाँ वो जीव प्रतिदिन 50-60 बार संभोग कर सकता है,
और अपनी ऐसी यौन इच्छाओं को पूरा कर सकता है,
जो इस मानव शरीर में संभव नहीं है।

अब,
ऐसी अलग अलग भौतिक इच्छाओं से बनी हमारी
चेतना के स्तर के अनुसार **84 लाख** प्रकार की
अलग अलग योनियाँ बनती हैं।

और मृत्यु के समय हम उन भौतिक इच्छाओं से बनी चेतना के जिस भी स्तर पर होते है, उसके अनुसार हमें अपनी उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त शरीर प्राप्त होता है।

जैसा कि पद्म पुराण कहता है,

जलज नव लक्षाणी : 9 लाख जलीय योनियाँ हैं,
स्थावर लक्ष विम्शति : 20 लाख पेड़ और पौधे की योनियाँ हैं,
कृमयो रूद्र संख्यक : 11 लाख सरीसृप योनियाँ हैं,
पक्षिणाम दश लक्षणं : 10 लाख पक्षी की योनियाँ हैं,
त्रिन्शल लक्षानी पशव : 30 लाख स्थलीय पशु की योनियाँ हैं,
चतुर लक्षाणी मानव : और 4 लाख मानव प्रजाति की योनियाँ हैं,
जिसमें देवता, राक्षस, दैत्य, गंधर्व, किन्नर, चित्त, चरण, यक्ष सभी समाहित हैं।

और **ये सभी रूप हमारी अपनी इच्छाओं से ही जन्म लेते हैं।**
हम जो भी इच्छाएँ बनाते हैं, **जैसी भी चेतना विकसित करते हैं,**
उसीसे हम अपने **शरीर की रचना करके** हमारी **जन्म और**
मृत्यु की अनंत यात्रा जारी रखते हैं।

अब सोचिए,

दिन-रात हम हमारे शरीर को आराम प्रदान करने और सजाने हेतु निरंतर प्रयास कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में **महत्व तो मात्र हमारी चेतना ही रखती है।**

इसलिए,
साधु और तपस्वी लोग केवल जरूरत हो उतना ही शरीर पर ध्यान देते हैं, जिससे बस उनका शरीर स्वस्थ और स्वच्छ रहे। तथा और **सारा ध्यान वे उनकी चेतना के विकास में लगाते है।**

क्योंकि आखिर में वही तय करेगा कि हमारा अगला जन्म किसी कीड़े, पशु, पक्षी, वृक्ष का, मानव का, या फिर किसी उच्च लोक में देवता का मिलेगा।

या फिर,

हमारे पास एक और विकल्प है।

यदि हम हमारे **जीवन का उपयोग हमारी चेतना को** भगवान की ओर, **नारायण की ओर ले जाने के लिए करते हैं; तो** हम इससे कभी न खत्म होने वाले **जन्म-मृत्यु के चक्र से** हमेशा के लिए **बाहर निकल सकते हैं।**

और अपने मूल शाश्वत रूपमें,
हमारे शाश्वत निवास स्थान को वापस जा सकते हैं।
जो कि है **सत्, चित् एवं आनंद** (अनन्त, जाग्रत एवं आनंदित)
से युक्त **आध्यात्मिक जगत।**

जहां हमें मिलेंगे...

परमात्मा

ईश्वर, भगवान, परमेश्वर

लेकिन,

भगवान है कौन?

तो,
अलग अलग धर्मों में भगवान की
अलग अलग व्याख्याएँ हैं।

परंतु हमारा **वेदांत सूत्र (1.1.2)** एक ऐसी व्याख्या देता है,
जिस पर संसार के लगभग सभी धर्म सहमत होंगे।

जन्माद्यस्य यतः ॥२॥
जन्मादी—उत्पत्ति आदि (उत्पत्ति + जीविका + प्रलय);
अस्य—इस (संसार) की;
यतः—जिससे।

"जिनसे समस्त (अस्तित्व) उत्पन्न होता है।"

अन्य शब्दों में,

"भगवान ही सभी के स्रोत है।"

वेदांत का **अर्थ** ही होता है : वेद + अंत : **वेदों का अंतिम उद्देश्य**
जिससे हम केह सकते है की यही व्याख्या सारे वैदिक शास्त्रों से सेहमत है।

अब सोचिए,

इस दुनिया में **सब कुछ**
प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (Perceivable & Non-Perceivable)
कहीं न कहीं से तो आया ही है।

सजीव हो या निर्जीव
सबका एक स्त्रोत तो है ही
जहां से उनकी उत्पत्ति हुई है।

उसका उत्पत्ति बिंदु खोजने पर,
हमें पता चलेगा कि वो स्त्रोत भी,
किसी अन्य स्त्रोत से आया है
और फिर उस स्त्रोत के भी मूल को
खोजेंगे तो पता चलेगा कि वो भी किसी और
महान स्त्रोत से आया है।

तो वो प्रारंभिक स्त्रोत,
जहाँ से सबकी उत्पत्ति शुरू होती है;
जहां से सबको स्थिरता प्राप्त होती है
और अंत में जहां सब कुछ घुल जाता है;
हर उस प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, सजीव, निर्जीव,
आत्मा और पदार्थ का मूल स्रोत है,

भगवान..

तो अब सवाल आता है कि,

भगवान कैसे हैं?

उनके गुण कौनसे हैं?

सर्वव्यापक : वो, जो हर जगह उपस्थित है।
सर्वज्ञ : वो, जो सब कुछ जानते हो।
सर्वशक्तिमान : वो, जो सर्वशक्तिमान है।

कर्तु : वे वो कर सकते हैं, जो हम कर सकते है।
अकर्तु : वे वो भी कर सकते है, जो हम नहीं कर सकते है।
अन्यथा कर्तु : वे वो सब भी कर सकते है, जो हम सोच भी नहीं सकते हैं।

लेकिन इन सबके ऊपर,
सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है,
कि वो हम सभी जीवात्माओं के **परम हितैषी** है।

'**सुहृदं सर्व-भूतानां'** - भगवद् गीता 5.29
भगवद् गीता उनका वर्णन करने के लिए **'सुहृदं'** शब्द का प्रयोग करती है।
तात्पर्य ये है कि वो मात्र एक अच्छे मित्र ही नहीं है, परंतु परम मित्र (सुहृद),
परम शुभचिंतक है, जो हमारे लिए **सबसे उचित** ही **चाहते हैं।**

और **हम में गलतियाँ, त्रुटियाँ** और **गलत प्रवृत्तियाँ**
होने पर भी, हमारा साथ कभी **नहीं छोड़ते है।**

भले ही हम, और यहाँ तक कि सम्पूर्ण जगत भी उन्हें ग़लत समझकर,
उन्हें कोसने लगता है, फिर भी वो हमारे लिए अच्छा ही करते हैं।
वे अपनी विशाल छवि का भी त्याग करके हमारे लिए उचित
करने के लिए हमेशा तत्पर रहते है।

ये उनका स्वभाव है।

और ये सब भी तब, जब वे स्वयं...
भग : ऐश्वर्य
वान : से भरपूर
भगवान : समस्त ऐश्वर्यों भरपूर ...है।

इसे सरलता से समझने के लिए,
सोचिए कि बलवान, धनवान, गुणवान का क्या अर्थ है!

विष्णु पुराण के 6.5.47 वे श्लोक में पराशर मुनि
हमें **भगवान की व्याख्या** देतें है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य
वीर्यस्य यशसः श्रियः
ज्ञान-वैराग्ययोस चैव
सन्नं भग इतिंगना ।।

अर्थात्,
हमारे परम पिता, परमेश्वर, **भगवान**, वे है जो
सभी छह ऐश्वर्यों से अनंत मात्रा में परिपूर्ण है,

1. **ताकत**
2. **यश**
3. **संपत्ति**
4. **ज्ञान**
5. **सुंदरता**
6. **त्याग**

सोचिए,

इस दुनिया में किसी के भी पास यदि इन छह ऐश्वर्य में से
कोई एक भी ऐश्वर्य थोड़ी भी अधिक मात्रा में हो,
तो वो इस दुनिया के लिए आकर्षक हो जाता है।

उदाहरण के लिए किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचिए जिनसे आप आकर्षित हो। आप ध्यान से अवलोकन करने पे समझोगे कि उस व्यक्ति में इनमें से एक या ज्यादा ऐश्वर्य दूसरों की तुलना में अधिक ही होगा।

इस दुनिया में **हम** सब **उन** व्यक्तियों **की ओर आकर्षित होते हैं जो** या तो **बलवान, धनवान, बुद्धिमान, कीर्तिवान, सौंदर्यवान या त्यागी होते हैं।**

तो सोचिये हम **उन** व्यक्ति **की ओर कितने आकर्षित होंगे**
जिनके पास ये **सभी ऐश्वर्य सम्पूर्ण मात्रा में हो**।

संसार के सबसे **बलवान से भी ज़्यादा बलवंत,**

न केवल पृथ्वी पर, किंतु समस्त ब्रह्मांडों में **सबसे प्रसिद्ध,**

सबसे अमीर से अधिक अमीर,
क्योंकि अंततः पूरी सृष्टि के स्वामी वही है।

सबसे बुद्धिमान से भी अधिक बुद्धिमान,
क्योंकि प्रत्येक जीव की बुद्धि उन्ही से आती है।

सबसे सुंदर व्यक्ति या वस्तु से अधिक सुंदर,
क्योंकि वो दुनिया की सारी सुंदरता के स्रोत है।

और ये सबकुछ अनंत मात्रा में होने के पश्च्यात भी, वे **पलक झपकते ही इन सभी ऐश्वर्यों का त्याग कर देंगे,** वो भी **उसके लिए जो निःस्वार्थ प्रेम** से फूल, पत्ती, फल या जल की एक बूंद भी उन्हें **अर्पण करता है।**

भगवान को खुश कैसे करें?

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मन:।।

- भगवद् गीता 9.26 और श्रीमद् भागवतम् 10.81.4

ये वे शब्द है जो भगवान कृष्ण के मुख से निकले थे,
जिस समय उन्होंने बचपन के उनके दरिद्र गुरुकुल मित्र
सुदामा द्वारा दिए गए सूखे चावल ग्रहण किये।

अपने मित्र के **शुद्ध निस्वार्थ प्रेम** से लिप्त, उन्होंने उन सूखे चावल के हर एक निवाले के बदले एक एक ब्रह्मांड देना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि स्वयं माँ लक्ष्मी को उन्हें रोकना पड़ा तब जाकर वे रुके, नहीं तो वे केवल मुट्ठी भर चावल के लिए अपने मित्र को सारी सृष्टि दे देते।

जी **हां, उन्हें प्रभावित करना इतना सरल है।**

वो **प्रेम भरे शुद्ध ह्रदय** से दी जाने वाली हर वस्तु को **स्वीकार** करते है।
यदि आपके पास एक फल भी है, तो उसे चढ़ाएं, यदि फल नहीं है तो फूल चढ़ाएं, यदि फूलों की ऋतु नहीं है, तो पत्ता चढ़ाएं; और अगर पत्ते भी कम हों तो हथेली भर पानी दें।

क्योंकि भक्त का **प्रेम ही है जो भगवान को प्रसन्न करता है**,
न कि भेंट का मूल्य। उन्हें हमारी भेंट के भौतिक मूल्य से कोई संबंध नहीं है।

परंतु,

वो सबसे अधिक महत्त्व देते है,
उस **प्रेम को** जिस से हम भेंट चढ़ाते हैं।

तुलसी-दल-मात्रेण जलस्य चुलुकेन च।
विक्रीणीते स्वम् आत्मानं भक्तेभ्यो भक्त-वत्सलः॥

"यदि आप **सच्चे प्रेम से भगवान को** बस एक तुलसी का पत्ता एवं हथेली में भर सके उतना जल **अर्पित करते हैं, तो** बदले में **वो स्वयं को आपको अर्पित कर देंगे**, क्योंकि उन्हें मात्र प्रेम से प्राप्त किया जा सकता है।”

जरा सोचिए,

अनंत कोटि ब्रह्मांडों के स्वामी,
जिनके गुण तथा लीलाएँ वर्णन से परे हैं,
एवं जो विचार मात्र से अनंत ब्रह्मांड बना देते
और फिर से उन्मे समा भी लेते है,
वो सर्वोच्च भगवान **प्रेम** से दी गई हमारी
सबसे विनम्र भेंट को भी **स्वीकार करते है।**

श्लोक में उपयोग किया गया शब्द है '**प्रयतात्मन:'**
जिससे भगवान कहते है कि,
"मैं उन लोगों की भेंट को स्वीकार करता हूं जिनके ह्रदय शुद्ध होते हैं।"

परंतु,

हर कोई उनके साथ सीधा भगवान स्वरूप में प्रेम का आदान-प्रदान नहीं कर सकता है। इसलिए वे स्वयं को तीन भिन्न रूपों में सबके लिए उपलब्ध करते है।

1. **ब्रह्म स्वरूप :**
   जो **निराकार** है,
   अव्यक्त (गुप्त) है,
   तथा **सर्वव्यापक** (हर स्थान पर उपस्थित) है।

2. **परमात्मा स्वरूप :**
   जो **प्रत्येक जीव के हृदय में** निवास करता है।
   योगी अपने **हृदय में** जिस रूप का **ध्यान करते हैं।**

3. **भगवान स्वरूप :**
   जो **साकार** है,
   जो की उनका मूल **व्यक्त** स्वरूप है,
   जो **आध्यात्मिक दुनिया में रहते है**
   तथा **केवल** अपने **भक्तों के लिए प्रकट होते है**

श्रीमद् भागवतम् के 2.2.8-12 वे श्लोक में **परमात्मा के उस सुंदर रूप** और यहाँ तक की उनके **कद** के बारे में भी बात की गयी है,

केचित् स्वदेहान्तर्हृदयावकाशे प्रादेशमात्रं पुरुषं वसन्तम् ।
चतुर्भुजं कञ्जरथाङ्गशङ्ख- गदाधरं धारणया स्मरन्ति ॥ ८ ॥

'अन्य लोग परम पुरुष को हृदय के क्षेत्र में शरीर के भीतर निवासित रूप देते है। जो अनामिका से अंगूठे के अंत तक (औसत **आठ इंच)** चार हाथों के साथ, हाथ में एक कमल, एक सुदर्शन चक्र, एक शंख और एक गदा लिए उपस्थित है।'

अतः,

वे वास्तव में,
हमारे हृदय में उपस्थित है
और **हम जो कुछ भी कर रहे हैं उसका अवलोकन कर रहे हैं।**
सब कुछ अच्छा, बुरा, धर्मी, अधर्मी, सब कुछ।

हमारे कृत्यों की तो बात ही छोड़िए,
हम हमारे विचार भी उनसे छिपा नहीं सकते।
वो सभी के साक्षी बनकर हमारे हृदय में खड़े है।

अब सोचिए,

वो स्थान जहाँ **ब्रह्मांड के स्वामी**
खड़े है, उसे हमें कितना स्वच्छ रखना चाहिए?

हमारे घर में जब कोई अतिथि या कोई बड़े व्यक्ति आते है,
तब कैसे हम सब कुछ साफ सुथरा रखते हैं?
तो फिर ये तो **हमारे जीवन में प्रवेश करने वाले**
सबसे बड़े और सबसे महत्त्वपूर्ण अतिथि है।

तो **क्या हमे** हमारे **हृदय** में उनके उस आसन को
लोभ, क्रोध, वासना और ईर्ष्या से भरा हुआ **रखना चाहिए?**

या हमे हमारा हृदय **साफ** रखना चाहिए,
तथा **प्रेम, धार्मिकता, दया, विनम्रता**
एवं संतुष्टि से **सुसज्जित** रखना चाहिए?

हजारों वर्षों के ध्यान और तपस्या के बाद भी **मात्र सबसे साफ हृदय के योगी** ही उनके **उस परमात्मा रूप की झाँकी प्राप्त कर सकते हैं।**

परंतु,
ऐसी **तपस्या** सभी के लिए **संभव नहीं है।** भगवान का अनुभव करने के लिए **हजारों वर्षों तक ध्यान** करने की **तो** बात ही **छोड़िए, हम**में से कितने लोग इस पतित युग में **100 वर्षों तक जीवित** भी रह सकते हैं?

लगभग **कोई नहीं।**
इसीलिए,
ईश्वर स्वयं को प्रत्येक जीव द्वारा अनुभव किए जाने तथा प्रेम के **आदान-प्रदान** के लिए चार **तरीक़ों** से उपलब्ध करते है।

1. **अवतार :**

जिसमें **वे** स्वयं भिन्न-भिन्न रूप धारण करके पृथ्वी पर **आते हैं,** धर्मी की रक्षा, अधर्मियों के विनाश, **धर्म की स्थापना और** सबसे अधिक महत्वपूर्ण, अपने **भक्तों के साथ** और उनके लिए **लिलाए करने के लिए।**
अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 4.5 से 4.9 पढ़े..

उदहारण :
भगवान राम, श्रीकृष्ण, भगवान नरसिंह आदि..

2. **भक्तवत्सल :**

भगवान जब पृथ्वी पर अवतार लेके आते है उस समय के अतिरिक्त भी **वे** भक्तों के लिए उनके सबसे प्रिय रूपों में और कभी कभी उन रूपों के **विग्रह रूप में दर्शन देते है।**
अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 9.30 से 9.32 तक पढ़े..

उदहारण : भगवान विट्ठल, श्रीनाथजी, उडुपी कृष्ण आदि...
ध्रुव महाराज, मीरा बाई, नरसिंह मेहता, संत तुकाराम और अन्य संत जैसे भक्तों के लिए...

3. विभूति :

अब उन लोगों के लिए जो चेतना के उस स्तर पर भी नहीं हैं जिससे वे विग्रह आराधना भी कर सकें, उनके लिए **भगवान** हमारे चारों ओर उन **विभूतियों के रूप** में हमसे सम्बंध बनाए रखते है जो **हमें जीवन प्रदान करती है और हमें पूर्ण बनाती है।**
अधिक विवरण : भगवद् गीता 7.8 से 7.12 और 10.19 से 10.42

उदहारण : पानी के स्वाद के रूप में, सूर्य एवं चंद्रमा के तेज के रूप में, अग्नि की ऊष्मा, बुद्धिमान की बुद्धि, बलवान का बल, वेदों में ॐ, संतान के जन्म के पश्च्यात माता-पिता में उत्पन्न होना वाला प्रेम...

4. शक्ति :

अब इन समस्त विभूतियों के अतिरिक्त, संपूर्ण अस्तित्व के **प्राथमिक आठ तत्व भी उनकी ही** भिन्न भौतिक **ऊर्जाएं हैं** जिन्हें अपरा शक्ति के रूप में भी जाना जाता है।

उदहारण :
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और मिथ्या-अहंकार।

और अंत में हम **जीवात्मा भी**,
वास्तव में **उनकी ही उर्जा** परा शक्ति के ही स्वरूप **हैं**।
अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 7.4 और 7.5 पढ़े..

तो, ये चार प्रमुख प्रकार हैं जिनसे भगवान
सभी जीवों से प्रेम का आदान-प्रदान करते है।

परंतु क्या होगा यदि हम इनमें से भी किसी से
प्रेम का आदान-प्रदान ना कर सकें?

क्या होगा यदि हम वेद नहीं पढ़ सकते, तपस्या, साधना, पूजा या मंत्रों का जाप भी नहीं कर सकते?

उनके लिए जो इस स्थिति पर भी नहीं हैं कि उनकी चेतना किसी तपस्या, पूजा, साधना, वेद अध्ययन, या किसी भक्ति सेवा के स्तर पर ना हो;
भगवान उन्हें उनके हृदय में ब्रह्म-अनुभूति प्रदान करते है।

परंतु उसके लिए उन्हें कुछ **योग्यता**ओं की आवश्यकता है,
जो की **है विशुद्ध प्रामणिकता, प्रबल इच्छा,**
सरल स्वभाव एवं संपूर्ण समर्पण।

यदि इन सभी योग्यताओं के साथ, कोई **पूरे मन से प्रार्थना** करता है
या मदद के लिए पुकारता है, तो किसी न किसी रूप में
भगवान मदद के लिए आते ही है।

उदहारण : गज मोक्ष लीला, द्रौपदी चीर हरण, पिंगला वेश्या आदि...

अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 10.11 पढ़िए...

अभी आइए जानते है कि,

कुल अवतार कितने हैं?

10..?
नहीं।

24...?
गलत।

100....?
निकट भी नहीं।

1000.....?

अच्छा, कैसा रहेगा यदि हम आपको छः विभिन्न प्रकार के अवतार का वर्णन करें उसके पश्च्यात आप ही हमे बताएं..!

हाँ? तैयार? उचित हैं।

6 प्रकार के अवतार,

1. **पुरुष अवतार**
2. **लीला अवतार**
3. **गुण अवतार**
4. **मन्वंतर अवतार**
5. **युग अवतार**
6. **शक्त्यावेश अवतार**

आइए इन्हें एक-एक करके समझते हैं।

.

.

.

.

.

.

Read further

in the full B.O.S.S Book,

Get your full book **NOW** from

www.Yoddha.store

Click here to get!

.

.

.

.

.

.

आगे क्या सीखेंगे आप इस पुस्तक में?

B.O.S.S : Basics of Sanatan Sanskriti

समस्त **सनातन संस्कृति का मूलज्ञान** एक पुस्तक में।
जिसे पढ़कर आपका जीवन को देखने का तरीक़ा बदल जाएगा।
और अपने अस्तित्व के सारे प्रश्न हाल हो जाएँगे।

क्या सीखोगे आप B.O.S.S पुस्तक में?

1. **आत्मा**, जीव का मूलज्ञान
2. **परमात्मा**, भगवान, ईश्वर का मूलज्ञान
3. **देवी - देवताओं** का मूलज्ञान
4. **प्रकृति** का मूलज्ञान
5. **योग** का मूलज्ञान
6. **धर्म** का मूलज्ञान
7. **कर्म** का मूलज्ञान
8. **ब्रह्मांड** का मूलज्ञान
9. **समय**, काल का मूलज्ञान
10. **शास्त्रों** का मूलज्ञान
11. **सनातन संस्कृति** का मूलज्ञान

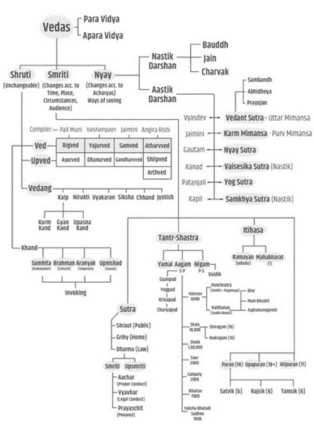

और इनमें भी इन विषयों को पढ़ना न भूलिएगा...

जीव के प्रकार ... अध्याय 1 में
अवतार के प्रकार ... अध्याय 2 में
33 कोटि या करोड़ देवता ... अध्याय 3 में
माया कैसे काम करती है ... अध्याय 4 में
10 यम और नियम ... अध्याय 5 में
धर्म और कर्म के प्रकार ... अध्याय 6, 7 में
ब्रह्मांड की संरचना... अध्याय 8 में
वैदिक शास्त्रों की संरचना... अध्याय 10 में

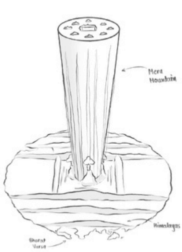

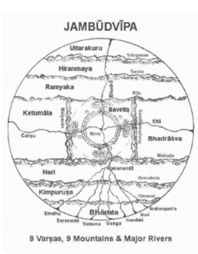

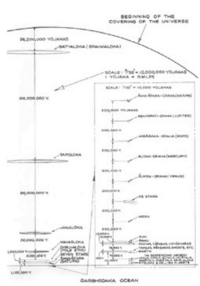

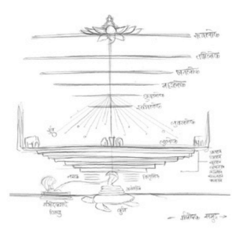

B.O.S.S द्वारा दिए गए 555 प्रश्नो के उत्तर

1. आत्मा का मूलज्ञान : 20

- आत्मज्ञान की शक्ति
- आत्मज्ञान कहाँ से शुरू होता है?
- हम कौन हैं?
- हमारा शरीर क्या है?
- हमारा शरीर किससे बना है?
- 11 इंद्रियां क्या हैं?
- हमारे शरीर का प्राथमिक कार्य क्या है?
- सोचने, समझने, इच्छा करने की क्रिया कौन करता है?
- हमारे शरीर के तत्व
- 2 प्रकार के तत्वों हमारा शरीर बना है
- हम अपने शरीर को कैसे आकार देते हैं?
- हमारे अगले जीवन को कैसे डिजाइन करें?
- अगले जीवन के शरीर के उदाहरण
- ब्रह्मांड में कितने प्रकार की प्रजातियां हैं?
- पद्म पुराण से कुल प्रजातियों की श्रेणियाँ
- प्रजातिया कैसे विभिन्न रूप कैसे लेती हैं?
- जीवन में वास्तव में क्या मायने रखता है?
- क्या तय करेगा कि हमें अगले जन्म में कौन सा शरीर मिलेगा?
- जन्म-मरण के चक्र से कैसे निकले?
- हमारा मूल इटर्नल रूप क्या है?

2. परमात्मा का मूलज्ञान : 26

- ईश्वर कौन है?
- भगवान की परिभाषा
- वेदांत का अर्थ
- भगवान कैसे है?
- भगवान के लक्षण
- भगवान का अर्थ
- भगवान के छह ऐश्वर्य
- ऐश्वर्य हमें कैसे प्रभावित करता है?
- भगवान को कैसे प्रभावित करें?
- भगवान किसे महत्व देते है?
- भगवान के तीन रूप
- परमात्मा का आकार
- हमारा हृदय कैसा होना चाहिए?
- 4 मार्गो से भगवान से आदान-प्रदान
- क्या होगा यदि हम इन चारों में से किसी से भी आदान-प्रदान नहीं कर सकते हैं?
- कितने अवतार होते हैं?
- छह प्रकार के अवतार
- तीन पुरुष अवतार
- 25 लीला अवतार
- तीन गुण अवतार
- चौदह मन्वंतर अवतार
- युग अवतार
- साक्षात अवतार क्या है?
- एक अवेशा अवतार क्या है?
- शक्तिवेश अवतार की शक्तियां
- अवतार के अन्य रूप

3. देवी देवता का मूलज्ञान : 67

- देवी-देवता कौन हैं?
- देवी-देवताओं के लक्षण
- देवी-देवताओं का पद कैसे अर्जित होता?
- देवी-देवताओं की शक्ति कहाँ से आती है?
- देवी-देवता कब बदलते हैं?
- इंद्र के स्थान पर कौन बैठा है?
- इंद्र के स्थान पर अगला कौन बैठेगा?
- सूर्यदेव के स्थान पर कौन बैठा है?
- देवी-देवताओं की स्थिति पूर्ण होने के बाद उनका क्या होता है?
- देवीदेवताओं की जगह कौन ले सकताहै?
- देवी-देवताओं का पद किसका प्रतिनिधित्व करता हैं?
- कितने देवी-देवता है? 33 कोटि या 33 करोड़?
- त्रिदेव और त्रिदेवी
- 3 विष्णु पुरुष
- 24 विष्णु रूप
- 12 सरस्वती
- 8 लक्ष्मी
- 12 गौरी
- 33 प्रमुख देवता

- गण कौन हैं?
- गणों का नेता कौन है?
- 12 आदित्य
- 8 वसु
- 11 रुद्र
- यक्ष और दस्युजनों के देवता कौन हैं?
- अन्य कल्पों के रुद्र
- 2 अश्विनी कुमार
- अश्विनी कुमार के पिता
- 36 तुषित
- 10 विश्वेदेव
- महाभारत के विश्वदेव
- 12 साध्यदेव
- 64 अभास्वर
- 12 यमदेव
- 49 मारुतगण
- मारुतगण कौन हैं?
- 7 मारुत
- मारुतो के 7 आंदोलन क्षेत्र
- मारुत कहाँ रहते हैं?
- मारुत का काम क्या है?
- 220 महाराजिक
- नव ग्रह देवता
- स्टांडर्ड श्रेणी के अन्य देवता
- स्टांडर्ड श्रेणी की अन्य देवियाँ
- स्थानों के देवता
- 9 पितृ
- नक्षत्रों के 12 अधिपति
- 10 दिशाओं के 10 दिग्पाल
- शास्त्रों में अन्य देवताओं की सूची
- कितनी अप्सराएं है?
- निष्कर्ष : देवताओं की संख्या
- कौन सा देवता क्या करता है?
- 14 मन्वंतर के 14 इन्द्र
- ब्रह्मांड की आत्मा कौन है? क्यों?
- यमराज के दो रूप
- देवी देवताओं का संचारक कौन है?
- कामदेव को अनंग क्यों कहा जाता है?
- आधुनिक समय में कार्तिकेय के विश्वव्यापी समुदाय
- देवों के ऋषि कौन हैं?
- वाल्मीकि और व्यास के गुरु कौन हैं?
- देवताओं का दूत कौन है?
- कौन किसका देवता है?
- किसकी पूजा किसके लिए करें ?
- इच्छा अनुसार देवता
- सबसे जल्दी प्रसन्न होने वाले देवता कौन है?
- अगर हम सब कुछ चाहते हैं तो किसकी पूजा करें?
- अगर हमें कुछ नहीं चाहिए तो किसकी पूजा करें?

4. प्रकृति का मूलज्ञान : 28

- प्रकृति क्या है?
- भगवान की 3 ऊर्जा
- आध्यात्मिक दुनिया कैसी है?
- भौतिक संसार कैसा है?
- आध्यात्मिक दुनिया सत चित आनंद क्यों है?
- भौतिक जगत् सत चित आनंद क्यों नहीं है?
- माया क्या है?
- माया का क्या मतलब है
- भगवान ने माया को क्यों बनाया?
- माया क्यों होती है?
- प्रकृति किससे बनी है?
- माया कैसे काम करती है? सिद्धांत..
- माया वास्तव में कैसे काम करती है?
- प्रकृति के तीन रूप
- हम तीन अलग-अलग गुणों को क्यों मेहसूस करते हैं?
- लोग तीन गुणों से कैसे प्रभावित होते हैं?
- क्या होता है जब हम माया में आनंद लेने का प्रयास करते हैं?
- भ्रामक संघर्ष
- चार न टाले जाने वाले दुख
- लगातार मिलने वाले तीन दुख
- माया क्यों काम करती है?
- छह अनर्थ
- क्या माया हमारे लिए इतनी बुरी है?
- माया देवी कौन है?
- माया आध्यात्मिक दुनिया की रक्षा कैसे करती है?
- प्रकृति क्यों है?
- भौतिक अस्तित्व का उद्देश्य
- माया के प्रभाव से हम कब मुक्त होते हैं?

5. योग का मूलज्ञान : 65

- योग क्या है?
- योग क्या नहीं है?
- योग की पांच प्रणालियां
- योग का अभ्यास करने के लिए पाँच आवश्यकताएँ
- अष्टांग (हठ) योग क्या है?
- अष्टांग योग के आठ अंग
- 10 यम:
- अहिंसा कैसे करें?
- सत्या का पालन कैसे करें?
- अस्तेय का पालन कैसे करें?
- ब्रह्मचर्य का पालन कैसे करें?
- क्षमा कैसे करें?
- धृति कैसे करें?
- दया कैसे करें?
- अर्जवा कैसे करें?
- मिताहारा कैसे करें?
- सौच कैसे करें?
- 10 नियम:
- तप कैसे करें?
- संतोष कैसे रखे?
- आस्तिक्य कैसे बने?
- दान कैसे करें?
- मति कैसे करें?
- ईश्वरपूजन कैसे करें?
- सिद्धांत श्रवण कैसे करें?
- ह्री कैसे करें?
- जप कैसे करें?
- हुत कैसे करें?
- सम्यम क्या है?
- आसन क्या है?
- आसनों को किसने प्रकट किया?
- कुल कितने आसन?
- कितने पूर्व-प्रतिष्ठित आसन है?
- भौतिक जगत में कितने आसन उपयोगी हैं?
- कितने आसन आवश्यक हैं?
- प्राणायाम क्या है?
- प्राणायाम किससे बनता है?
- प्राणायाम के कई तरीके
- प्राणायाम तकनीक
- प्रत्याहार क्या है?
- प्रत्याहार कैसे किया जाता है?
- धारणा क्या है?
- धारणा की वस्तु को क्या कहते हैं?
- धारणा कैसे कि जाती है?
- ध्यान का प्रारंभिक चरण क्या है?
- ध्यान क्या है?
- ध्यान की प्रक्रिया?
- ध्यान और धारणा में अंतर?
- ध्यान योग क्या है?
- समाधि क्या है?
- समाधि में क्या होता है?
- समाधि के तीन प्रकार
- कर्म योग क्या है?
- कर्म के 3 प्रकार
- कर्म क्या है?
- विकर्म क्या है?
- अकर्म क्या है?
- कर्म और विकर्म किसके कारण होते हैं? कैसे?
- कर्म के अनंत चक्र का समाधान क्या है?
- अकर्म हमें क्यों नहीं बांधते?
- ज्ञान योग क्या है?
- सभी दर्शन शास्त्र किस योग प्रणाली पर बने हैं?
- भक्ति योग क्या है?
- योगिक उन्नति के स्तर
- सभी योग प्रक्रियाओं का अंतिम लक्ष्य क्या है?

6. धर्म का मूलज्ञान : 63

- धर्म क्या है?
- धर्म क्या नहीं है?
- क्या रिलिजन का मतलब धर्म है?
- धर्म का क्या अर्थ है?
- धर्म क्यों नहीं बदला जा सकता?
- जीव का धर्म क्या है?
- आत्मा का स्वरूप क्या है?
- सेवा की चार प्रेरणाएँ
- आत्मा का परम सनातन धर्म क्या है?
- प्रेम क्या है?
- भौतिक संसार में प्रेम करना क्यों संभव नहीं है?
- हमारी इटर्नल आवश्यकता क्या है?
- हम भौतिक अस्तित्व के कुंड में कैसे गिरते हैं?

- सभी सामाजिक समस्याओं का एक समाधान क्या है?
- धर्म का पालन करने पर क्या होता हैं?
- कर्तव्य के रूप में धर्म
- भगवान ने धर्म की रचना क्यों की है?
- धर्म का उद्देश्य क्या है?
- धर्म के दो अंग
- शुद्ध/आत्मा/नित्य धर्म क्या है?
- गौन / नैमित्तिक धर्म क्या है?
- साधरण धर्म क्या है?
- मानसिक धर्म क्या है?
- शारीरिक धर्म क्या है?
- युग धर्म क्या है?
- चार युगों के युग धर्म क्या हैं?
- अपद धर्म क्या है?
- वर्णाश्रम धर्म क्या है?
- चार वर्ण क्या हैं?
- चार आश्रम कौन से हैं?
- वर्ण धर्म क्या है?
- वर्ण कैसे विभाजित है?
- ब्राह्मण कौन है?
- ब्राह्मण के प्राकृतिक गुण क्या हैं?
- ब्राह्मण के कर्तव्य क्या हैं?
- क्षत्रिय कौन है?
- 5 कमजोर अबला
- वैश्य कौन है?
- वैश्य के प्राकृतिक गुण क्या हैं?
- वैश्य के कर्तव्य क्या हैं?
- क्षुद्र कौन है?
- क्षुद्र के प्राकृतिक गुण क्या हैं?
- क्षुद्र के कर्तव्य क्या हैं?
- अंत्यज कौन है?
- अंत्यज के गुण क्या हैं?
- चारों वर्णों के सामान्य कर्तव्य
- आश्रम धर्म क्या है?
- आश्रम प्रणाली क्यों डिजाइन की है?
- ब्रह्मचारी का क्या मतलब है?
- क्या होता है ब्रह्मचारी आश्रम में?
- क्या होता है ब्रह्मचारी आश्रम में?
- गृहस्थ का क्या अर्थ है?
- गृहस्थ आश्रम में क्या होता है?
- गृहमेधी किसे कहते हैं?
- कब विवाह नहीं करना चाहिए?
- वानप्रस्थ का क्या मतलब है?
- वानप्रस्थ आश्रम में क्या होता है?
- सन्यास का क्या मतलब है?
- संन्यास आश्रम में क्या होता है?
- वर्ण और आश्रमका सम्बंध
- कलियुग में सन्यास क्यों वर्जित है?
- कलियुग में संन्यास के स्थान पर शास्त्र क्या सुझाता है?

7. कर्म का मूलज्ञान : 24

- कर्म क्या है?
- कर्म के दो मुख्य अर्थ
- कार्य के रूप में कर्म
- कर्म के दो स्वरूप
- पुण्य कर्म क्या है?
- पाप कर्म क्या है?
- कर्म का द्वंद क्या है?
- अनिवार्य कर्तव्यों के रूप में कर्म
- दो प्रकार के कर्म
- लौकिक कर्म क्या है?
- अलोकिक कर्म क्या है?
- लौकिक कर्म की 5 श्रेणियां
- नित्य कर्म क्या है?
- नैमित्तिका कर्म क्या है?
- 16 संस्कार
- 6 पितृ कर्म
- अन्य नैमित्तिक कर्म
- काम्या कर्म क्या है?
- प्रायश्चित कर्म क्या है?
- प्रायश्चित कर्म का उद्देश्य
- सच्चा प्रायश्चित कब प्राप्त होता है?
- निष्काम कर्म क्या है?
- निसिद्ध कर्म क्या है?
- अन्य प्रकार के कर्म

8. ब्रह्मांड का मूलज्ञान : 80

- संकल्प मंत्र क्या है?
- वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान की मूल बातें
- हम कुल भौतिक अस्तित्व का कितना हिस्सा अनुभव कर सकते हैं?
- डायमेंशनल सीमाओं को पार करने के दो तरीके।
- अस्तित्व की प्रकृति क्या है?

- भारतवर्ष क्या है?
- भारतवर्ष के 9 खंड
- जम्बूद्वीप
- जम्बूद्वीप के 9 वर्ष
- जम्बूद्वीप पर भारतवर्ष कहाँ है?
- अन्य 8 वर्षा में कौन रहता है?
- 9वर्षों के अधिष्ठाता देवता
- 8 आकाशीय पर्वत 9 वर्षा को अलग करते हैं
- सुमेरु : स्वर्ण पर्वत
- सार्वभौमिक दिशाओं की गणना कैसे की जाती है?
- स्वर्ग का मार्ग क्या है?
- ब्रह्मपुरी कहाँ है?
- अस्ता दिक्पालस के 8 शहर
- 7 संकेंद्रित द्वीप
- 7 संकेंद्रित महासागर
- 7 कन्सेन्ट्रिक महासागर
- गरुड़ देव कहाँ रहते हैं?
- निम लोका कहाँ है?
- देव लोक कहाँ है?
- हुमांडल की त्रिज्या क्या है?
- मानवमंडल की संरचना
- 6 ऊपरी लोक
- 9 ग्रह की स्थिति
- भारतवर्ष में क्या खास है ?
- कर्म भूमि कहाँ है?
- कर्मभूमि के सिवाय और कौन से स्थान हैं
- भारतवर्ष के बाहर के स्थानों में कौन सा युग चलता है?
- 7 निचले लोक
- बाली महाराज के महल के दरवाजों पर कौन पेहरा देता है?
- मंदोदरी के पिता कौन हैं?
- नाग कहाँ रहते हैं?
- दानव कहाँ रहते हैं?
- नागों का नेता कौन है?
- नरका कहाँ है?
- कितने नरक?
- 28 नरकों के नाम
- पितृसत्ता का मुखिया कौन होता है?
- 14 लोकों की पूरी सृष्टि कहाँ स्थित है?
- अनंत शेष कहाँ विश्राम करते है?
- कूर्मा कहाँ तैर रहा है?
- गर्भोदक समुद्र का जल किसने भरा?
- ब्रह्माण्ड के 7 तात्विक आवरण
- ब्रह्माण्ड का आकार
- आप इस ब्रह्मांड में क्या कर रहे हैं?
- मल्टीवर्स
- लाखों ब्रह्माण्ड कहाँ तैरते हैं?
- अन्य ब्रह्माण्डों के आकार
- ब्रह्मा के सिरों की विभिन्न संख्या
- द्वारिका लीला
- सभी ब्रह्माण्ड कहाँ से आते हैं?
- करणों दक्षयी विष्णु
- भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व का आकार
- भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व का आकार
- आध्यात्मिक दुनिया कहाँ से शुरू होती है?
- ब्रह्म ज्योति
- ब्रह्म ज्योति में मोक्ष किसे मिलता है?
- नित्य कैलाश
- अयोध्या : साकेत लोका
- वैकुंठ लोक
- द्वारिका धाम
- मथुरा धाम
- गोलोक वृंदावन धाम
- मधुरा धाम
- भगवान के साथ संबंधों के प्रकार
- पूतना अब कौन है?
- एक आत्मा का परम सुख क्या है?
- आध्यात्मिक दुनिया कैसी है?
- वैकुंठ का अर्थ
- कुंठ जगत क्या है?
- आध्यात्मिक दुनिया की सुंदरता
- कल्प तरु
- हमारा इटर्नल घर कैसा है?
- ऐसा कौन सा अनुभव है जिसकी तलाश हर आत्मा कर रही है?
- हम असंतुष्ट क्यों रहते हैं?
- भौतिक जगत में हमारी आंखें कौन खोलता है?
- हम भौतिक दुनिया में कैसे पहुंचे?
- भगवान के पास वापस कैसे जाएं?

9. समय का मूलज्ञान : 52

- समय क्या है?
- उसे काल क्यों कहा जाता है?
- दोनों दुनियाओं में समय का सामान्य कार्य
- समय की नॉन लीनियर प्रकृति
- समय की चक्रीय प्रकृति
- समय का क्वांटम स्तर पर वैदिक माप
- चौघड़िया क्या है?
- चौघड़ियें के भगवान
- चौघड़ियें के दिन
- चौघड़ियें के हिसाब से कार्य
- 7 सप्ताह के दिन और उनसे जुड़े ग्रह
- सूर्य सिद्धांत समय गणना
- वैदिक समय गणना
- यह पक्ष क्या है?
- दो प्रकार के पक्ष
- शुक्ल पक्ष के नाम
- कृष्ण पक्ष
- शुक्ल और कृष्ण पक्ष में दिन
- सूर्य सिद्धांत समय गणना
- वैदिक समय गणना
- 12 महीने
- 6 ऋतु
- 60 संवत्सर
- 3 त्रिदेवों की जवाबदारियां
- 4 युग अवधि
- कैसा था सतयुग
- कैसा था द्वापरयुग
- कैसा था त्रेतायुग
- कलियुग कैसा था
- 14 मन्वंतर
- कल्पभेद क्या है?
- क्या हम इसकी तुलना मल्टीवर्स थ्योरी से कर सकते हैं?
- किस कल्प में नारद और 4 कुमारों का जन्म हुआ था?
- वर्तमान कल्प का नाम क्या है ?
- किस मन्वंतर में कौन सा अवतार आया?
- हम किस मन्वंतर में रेहते हैं?
- हम किस महायुग में जी रहे हैं?
- ब्रह्मा का जीवनकाल कितना होता है?
- हमारे ब्रह्मांड का जीवन काल क्या है?
- प्रलय क्या है?
- समय को काल क्यों कहते हैं?
- 5 प्रकार के प्रलय
- नित्य प्रलय क्या है?
- महायुग प्रलय क्या है?
- नैमित्तिला प्रलय क्या है?
- प्रकृति प्रलय क्या है?
- आत्यंतिका प्रलय क्या है?
- काल की उत्पत्ति क्यों हुई?
- समय की प्रकृति
- 4 स्टेप पैटर्न परिवर्तन
- आध्यात्मिक दुनिया में काल कैसे काम करता है?
- संकल्प मंत्र को समझना
- हम इस समय कहाँ हैं?

10. वैदिक शास्त्रों का मूलज्ञान : 120

- वैदिक शास्त्र क्या हैं?
- वे क्यों होते हैं?
- वेद कितने साल के हैं?
- वेदों की रचना किसने की?
- वैदिक ज्ञान का प्रसार कैसे हुआ?
- वेदों को कैसे कंठस्थ किया गया?
- ऋषियों ने वेदों को कम्पाइल करने का निर्णय क्यों लिया?
- वेदों का संकलन किसने किया?
- वैदिक साहित्य का वृक्ष
- वैदिक साहित्य की संरचना
- वेदों में दो प्रकार के ज्ञान
- वैदिक शास्त्रों की तीन श्रेणियां
- श्रुति क्या है?
- ब्रह्मांड में वेदों का प्रवेश कब हुआ?
- वेदों को सबसे पहले किसने सुना?
- श्रुति की 3 सामग्री
- वेदांग क्या हैं?
- 6 वेदांग
- वेद क्या है?
- 4 वेद
- वेदों के 4 विभाजन
- ऋग्वेद के बारे में
- ऋग्वेद का संकलन किसने किया?
- यजुर्वेद के बारे में
- यजुर्वेद का संकलन किसने किया?
- यजुर्वेद के दो भाग

- सामवेद के बारे में
- सामवेद का संकलन किसने किया?
- सामवेद के दो भाग
- अथर्ववेद के बारे में
- अथर्ववेद का संकलन किसने किया?
- अथर्ववेद में सर्वोच्च देवता कौन है?
- उपवेद क्या हैं?
- 5 उपवेद और उनके संबंधित वेद
- आयुर्वेद के 8 घटक
- स्मृति क्या है?
- स्मृति किसके अनुसार बदलती है?
- स्मृति शास्त्रों की 4 सामग्री
- पुराण क्या है?
- पुराणों के 5 लक्षण
- पुराणों की 5 अतिरिक्त विशेषताएं
- प्रारंभ में कितने पुराण थे?
- महापुराण में पहले कितने श्लोक थे?
- मनुष्यों के लिए पुराणों में कितने श्लोक हैं?
- पुराणों का विभाजन किसने किया?
- पुराणों की सामग्री क्या है?
- क्या होता है जब हम बिना उचित मार्गदर्शन के पुराणों का अध्ययन करते हैं?
- पुराणों में दो प्रकार के भेद
- पुराणों और कल्पों वर्णन
- सभी पुराणों में सर्वोच्च भगवान क्यों बदलते हैं?
- गुण के अनुसार पुराणों की 3 श्रेणियां
- एक श्लोक में 18 महापुराण के नाम
- 18 उपपुराण
- अन्य उपपुराण
- 11 अति पुराण या पशुपति पुराण
- इतिहास क्या है?
- दो प्रमुख इतिहास
- महाभारत के बारे में
- महाभारत किसने सुनाया?
- महाभारत किसने लिखा था?
- महाभारत की महानता
- महाभारत की सामग्री क्या है?
- महाभारत में श्रीमद् भगवद् गीता कहाँ है?
- महाभारत में कितने श्लोक हैं?
- महाभारत के 18 पर्व
- महाभारत में रामायण
- महाभारत के दो जोड़े गए लेखक
- रामायण के बारे में
- रामायण सबसे पहले किसने सुनाई?
- रामायण में मूल रूप से कितने श्लोक थे?
- रामायण कितनी बार हुई?
- हाल ही में रामायण कब हुई थी?
- रामायण किसने लिखी थी?
- रामायण कितने प्रकार की होती है?
- कई प्रमुख प्राचीन रामायणों में से 27 रामायण
- वाल्मीकि मुनि ने कितनी रामायण की रचना की?
- ब्रह्मा और भगवान शिव की रामायण
- वानरसेना की रामायण
- अन्य रामायण
- क्षेत्रीय रामायण
- सूत्र क्या हैं?
- 3 सूत्र शास्त्र
- धर्म सूत्र
- धर्म सूत्र के 4 विषय
- 21 उपलब्ध धर्म स्मृतियाँ
- 15 उप स्मृति
- तंत्र क्या है?
- तंत्र शास्त्र की सामग्री
- तंत्र की तीन श्रेणियां
- यमल क्या है?
- यमल की सामग्री
- यमल शास्त्र में से कुछ कोनसे हैं?
- निगम क्या है?
- निगम को किसने बताया?
- निगमों की सामग्री
- अगम क्या है?
- अगम को किसने बताया?
- अगमों की सामग्री
- अगमों के चार पद
- अगमों की श्रेणियाँ
- वैष्णव अगम
- शैव अगम
- अन्य अगम
- अगम शास्त्रों में कितने श्लोक हैं?
- न्याय क्या है?
- न्याय शास्त्र किसके अनुसार बदलता है?
- न्याय शास्त्रों की सामग्री
- 2 प्रकार के दर्शन
- नास्तिक दर्शन क्या है?
- 4 प्रमुख नास्तिक दर्शन
- आस्तिक दर्शन क्या है?

- 6 आस्तिक दर्शन शास्त्र
- 6 आस्तिक दर्शन शास्त्रों का नेतृत्व करने वाले ऋषि
- शास्त्रों के बाद के स्रोत
- कामसूत्र वास्तव में किस बारे में है?
- शास्त्रों का अध्ययन क्यों करें?
- शास्त्रों का अध्ययन करने की क्या आवश्यकता है?
- शास्त्रों का अध्ययन कैसे शुरू करें?
- वर्तमान समय में वेदों का अध्ययन करने के लिए 3 दृष्टिकोण
- 99% लोगों के लिए सही दृष्टिकोण

11. सनातन संस्कृति का मूलज्ञान : 10

- सनातन संस्कृति क्या है?
- भारत सोने की चिड़िया क्यों था?
- भारत अब सोने की चिड़िया क्यों नहीं है?
- वैदिक काल में 4 निःशुल्क मूलभूत आवश्यकताएं
- वैदिक संस्कृति किसके लिए बनाई गई है?
- वैदिक संस्कृति को कैसे डिजाइन किया गया है?
- अधिकार एवं उत्तरदायित्व
- हम स्वर्णिम समय कैसे वापस लाएंगे ?
- शुरू करने के लिए सबसे सरल कदम (होमवर्क)
- **Veducation की आने वाली किताबें**

Get your full book **NOW** from

WWW.YODDHA.STORE

Click here to get!